चतुर्थ अध्याय

"विवेच्य कहानियों के कथ्य का अनुशीलन"

चतुर्थ अध्याय

''विवेच्य कहानियों के कथ्य का अनुशीलन''

प्रस्तावना :

यशस्वी महिला कहानीकार चित्रा मुद्गल हिंदी साहित्य आकाश में बहुचर्चित है। चित्रा मुद्गल ने अपने साहित्य में उपन्यास से अधिक कहानियों का लेखन किया है। विवेच्य दो कहानी संग्रह में चित्रा ने अनेक कथ्यों को उठाया है। जिसमें नारी शोषण, परित्यक्त्या, विधवा की कुंठित मानसिकता, पारिवारिक दूरियाँ, आर्थिक विषमता, नैतिक मूल्यों का ह्रास, राजनेता लोगों द्वारा गरीबों का शोषण आदि प्रमुख कथ्य हैं। प्रस्तुत अध्याय में इन्हीं विभिक्त कथ्यों का विवेचन प्रस्तुत किया है। इससे पहले कथ्य की परिभाषा, स्वरूप को देखना आवश्यक है।

4.1 कथ्य :

'' 'कथ्य' धातु से बना शब्द कथ्य का अर्थ है कथनीय कथन करने योग्य।''[1]

यह अंग्रेजी शब्द का पर्यायवाची शब्द माना जाता है - ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इसका अर्थ इस प्रकार दिया है - ''अन्तर्वस्तु अन्दर रखी हुई वस्तु, विषयानुसार या विचार अथवा धारणा का मूल्यतत्त्व।''[2]

प्रसिद्ध लेखिका आशा मेहता के मतानुसार ''जीवन का अंकन करते हुए उसके प्रति लेखक की अनुभूत जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति ही कथ्य है।''[3]

''कथ्य के बारे में लूनाचस्की ने लिखा है कि कलाकारों को ऐसे कथ्य सामने लाने चाहिये जिस पर कुछ न लिखा गया हो। कृति के वस्तुतत्त्व की निर्मिति में भावों और विचारों दोनों का योग रहता है ।''[4]

---

1. कालिका प्रसाद (संपा.)- बृहत् हिंदी कोश, पृष्ठ - 212
2. फाऊलर द-इन-साईज - ऑक्सफर्ड डिक्शनरी ऑफ करंट इंग्लिश, पृष्ठ - 263
3. डॉ.आशा मेहता - विचारप्रधान उपन्यासों में कथ्य और शिल्प, पृष्ठ - 17
4. डॉ. शिवकुमार मिश्र - मार्क्सवादी साहित्य चिंतन, पृष्ठ - 390

इस प्रकार कथ्य का परिचय करने के पश्चात् हम यहाँ कहानी-संग्रह के आधार पर हर कहानी के कथ्य का अध्ययन करेंगे।

4.2 राजनेताओं द्वारा गरीबों का शोषण :

'जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं' इस कहानी में चित्रा ने राजनेताओं की भ्रष्ट राजनीति, सामान्य गरीब जनता का शोषण, आदि समस्याओं को उठाकर चित्रा ने अनेक आयामों को उद्घाटित किया है। प्रस्तुत कहानी राजनीतिक लोगों के दूहरे चरित्र को बेनकाब करती है। 21 वीं सदी में कई ऐसे देहात हैं जहाँ के लोग विकलांग मुक्त नहीं हुये तथा उनकी अभावग्रस्त जिंदगी खत्म नहीं हुयी । कहानी की नायिका सुक्खन भौजी के बेटे ललौना को राजनेता पहियेवाली गाड़ी देते हैं लेकिन कुछ दिन बाद वही गाडी दूसरे गांव में देने के लिए फिर से माँगते है। सुक्खन भौजी के पाँवों तले जमीन खीसक जाती है तथा सिर्फ पहियेवाली गाड़ी सपना मात्र बन जाती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में निम्नांकित कथ्य सामने उभरकर आते हैं -

1) आर्थिक विषमता
2) राजनेताओं की पाखंडी वृत्ति द्वारा गरीब जनता का शोषण।

4.3 नैतिक मूल्यों में ह्रास :

मनुष्य की उम्र के साथ नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन आता है। इन मूल्योंको स्वीकार करें तो ही जीवन सुखमय हो जाता है नहीं तो जिंदगी में बोझिलता आ जाती है। 'अपनी वापसी' कहानी में नायिका शकुन प्रौढावस्था में आये बदलाव को स्वीकार नहीं कर पा रही है। पति हरिश बदलते नैतिक मूल्यों से पूरी तरह वाकिब है। शकुन पूर्वघटित जिंदगी की खुमारी लिए अभी भी जी रही है। बच्चों के साथ बातें न करना, अकेले रहना, हरिश को उसकी जरुरत नहीं ऐसा समझना इन खयालों से उसकी जिंदगी खोखली बना गयी है। अंत में हरिश के मित्र कर्नल साहब की बातों द्वारा समझ जाती है कि उम्र के साथ जिंदगी के उसूल भी

बदल जाते हैं। नैतिक मूल्यों में परिवर्तन आता है और उसी के साथ नए अंदाज से जीना, मनुष्य की स्वाभाविकता है। कहानी में आधुनिकीकरण का प्रभाव पूरे परिवार पर दिखाई देता है। कर्नल साहब की बातों से शकुन की आँखें खुल जाती है तथा उसे अपनी ही वापसी लगती है। यहाँ डॉ. मालती आदवानी का कथन द्रष्टव्य है कि –

''इन कहानियों के पात्र साधारण प्रकृति के हैं पर कुछ अंशो में उनकी असाधारणता इस बात से सिद्ध होती है कि वे कभी हताश होकर पराजय स्वीकार नहीं करते। 'अपनी वापसी' की शकुन घर में अकेलापन भुगतती हुई अपने को शून्य होता अनुभवित करती है, परंतु अंत में वह जीने का संकल्प करती है और इसी के साथ उनका तनाव भी समाप्त हो जाता है।''[1]

4.4 आर्थिक विषमता :

गरीबी, आर्थिक विषमता के कारण मनुष्य किस तरह एक जानवर के साथ जानवर से भी बदतर व्यवहार करता है यह 'जिनावर' इस कहानी द्वारा रेखांकित किया है। अमानवीयता मनुष्य में किस तरह व्याप्त है यह इस कहानी द्वारा चित्रित किया है। कहानी में भ्रष्टाचारी व्यवस्था पर भी करार व्यंग्य कसा है। असलम को दो हजार रूपए देकर पुलिस केस को वहीं दबा देते हैं। इस प्रकार पुलिस यंत्रणा में चल रही अव्यवस्था, लाचारी, स्वार्थलोलुपता आदि पर लेखिका ने व्यंग्य कसा है। असलम द्वारा सरवरी की जानबूझकर की गयी हत्या इस दिल को हिलानेवाले कृत्य को चित्रा ने बारीकी से प्रस्तुत किया है। महावीर तनहा का कथन यहाँ द्रष्टव्य है कि ''संग्रह में न सिर्फ मानवीय समस्याओं को उकेरा गया है वरन 'जिनावर', जैसी उष्मा कहानियों में जानवरों के प्रति सहानुभूति को दर्शाया है।''[2]

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में निम्नांकित कथ्य उभरकर आते हैं –

1) आर्थिक विषमता ।

---

1. डॉ.मालती आदवानी – लेखिकाओं की नवें दशक की हिंदी कहानियों में पारिवारिक संबंध, पृष्ठ–188
2. भटनागर हरि (संपा.)– साक्षात्कार, जनवरी, 2005, पृष्ठ – 109

2) पैसों की लालच के कारण अमानवीयता ।

3) भ्रष्टाचारी व्यवस्था पर व्यंग्य ।

'भूख' इस कहानी में आर्थिक विषमता यह कथ्य प्रमुख रूप से उभरकर सामने आया है।

'भूख' इस कहानी में लेखिका ने भूख की भयावहता का विदारक चित्र बहुत ही यथार्थ से प्रस्फुटित किया है। अमानवीयता, गरीबी, पैसों के लालच के कारण भूख के खातिर मनुष्य भूख से ही किस प्रकार मार डालता है यह प्रस्तुत कहानी द्वारा चित्रित किया है। कहानी की नायिका लक्ष्मा अपने बेटे को एक ऐसी औरत के पास सौंपती है जो दो वक्त का खाना देकर उसे संभालती है। दूध तथा बिस्कुट देती है तथा किराया भी देती है। लेकिन वह औरत लक्ष्मा के बेटे को बिना खिलाये-पिलाये भूखा ही रखती है, इस कारण बेटा मर जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में भूख की भयावहता तथा गरीबी, समाज में स्थित गरीबों के प्रति निर्ममता, दूरावस्था मजदूरों का शोषण आदि को चित्रित किया है। यहाँ राजेंद्र सिंह महल्लौत का कथन द्रष्टव्य है - "भूख कहानी निम्न वर्ग की महिला एवं उसके पुत्र की दयनीय दशा एवं उनकी भूख को इस भाँति चित्रित करती है कि जहाँ एक ओर पाठकों का हृदय करूणा से विह्वल हो उठता है वहीं कहानी के क्लाईमैक्स का यह अंश कि ढंह रही लक्ष्मी को कुछ सुनाई नहीं दे रहा। उसे सिर्फ दिखाई दे रही थी दूध भरी बोतल, बिस्कुट का डिब्बा, चिपकी आंते और एक बच्चे की लाश! अपने पीछे छोड़ जाते हैं ढेर सारे प्रश्न जिसका समाधान समाज क्या किसी युग में ढूंढ पायेंगे।"[1]

'त्रिशंकु' कहानी में भी आर्थिक विषमता इस कथ्य को प्रमुखता से दर्शाया है। झुग्गी-झोपडियों में रहनेवाले लोगों का अभावग्रस्त जीवन, संस्कारहीनता, दरिद्रता, बंडू की किशोरवयीन मानसिकता पर हुए घात - प्रतिघात आदि को चित्रा जी ने चित्रित किया है। आर्थिक विपन्नता के कारण ही बंडू घर के

---

1. विजयकुमार देव (संपा.) - अक्षरा, नवंबर-दिसंबर, 2004, पृष्ठ - 58

माहौल से तंग आकर ब्लैक से टिकट बेचने का व्यवसाय करता है, जिसमें वह पुलिस के हाथों पकड़ा जाता है। कम आयु के कारण 'डोंगरी सुधार गृह' में उसे रखा जाता है। तब तक बंडू की माँ दूसरी शादी कर लेती है। जेल से छूटने के बाद बंडू माँ से मिलने जाता है तो रास्ते में लक्ष्मी काकी उसे बता देती है कि तुम्हारी माँ ने दूसरी शादी की है तुम्हारे मौसी के देवर के साथ। यह सुनते ही बंडू अचेत-सा खड़ा रहता है। उसकी अवस्था उस त्रिशंकु की तरह हो जाती है जिसे ना माँ की छत्रछाया मिलती है ना ही बाप की।

झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले लोगों की पूरी जिंदगी का हू-ब-हू यथार्थ वर्णन इस कहानी में हुआ है। कहानी में बालमनोवैज्ञानिकता को भी बंडू के माध्यम से स्पष्ट किया है।

" 'त्रिशंकु' कहानी बाल अपराध,नैतिकता, गरीबी आदि को विश्लेषण करती हुई महानगर में झोपडपट्टी में रहनेवालों के जीवन का कच्चा-चिठ्ठा यथार्थपरक ढंग से बयान करती हुई दूषित चरित्र, गरीबी, अशिक्षा, नशाखोरी, बिखरते परिवार में बच्चों की त्रिशंकु स्थिति को अत्यंत संवेदनशील ढंग से बतलाती है।"[1]

केंचुल -

'केंचुल' इस कहानी में झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी, आर्थिक विपन्नता, दरिद्रता, बेरोजगारी आदि को दर्शाया है।

कहानी में कमला जीवनभर संघर्ष करती है। वह शराब के अड्डे का व्यवसाय करके घर- गृहस्थी चलाती है। कमला की बेटी सरना एक लड़के से प्यार करती है। कमला शादी के लिए विरोध करती है। अंत में कमला ही विचार करके यह निर्णय लेती है कि वह सरना की शादी उस लडके से करेगी जिससे वह प्यार करती है। कमला यह भी विचार करती है कि वह जिसे प्यार करती है उसके

---

1. विजयकुमार देव (संपा.) - अक्षरा, नवंबर-दिसंबर, 2004, पृष्ठ - 58

साथ कमला की शादी न हो पायी क्योंकी कमला ने घरवालों के डर की वजह से बताया ही नहीं। सरना का अपने प्रेमी के प्रति विश्वास देखकर कमला यह निर्णय लेती है कि जिस केंचुलभरी जिंदगी में वह अटकी उसी केंचुल में अपनी बेटी को वह नही भेड़ देगी । अत: कमला सरना की शादी कर देती है।

यहाँ मनोज कुमार पाण्डेय का कथन द्रष्टव्य है कि ''यह कहानी इसलिए बेहद सशक्त बन पड़ी है क्योंकि 'कमला' और 'सरना' के चरित्र बेहद सशक्त और प्रभावी है। टूटकर भी न टूटनेवाले, हार कर भी न हारनेवाले ।''[1]

अनुबन्ध –

आर्थिक विषमता, महानगरीय जीवन की अनेक समस्याएँ, महँगाई, बेकारी जगह की समस्या आदि के कारण उनके रिश्तों में दरारें आ जाती हैं तथा व्यक्ति आत्मकेंद्रित बनता है। नरेन ने एक फिल्म का स्वतंत्र रूप से निर्देशन किया है इसी वजह से वह अब सहायकी स्वीकारना नहीं चाहता। घर में आर्थिक तंगी बहुत है इसलिए उसे उसकी पत्नी की राय के अनुसार सहायकी स्वीकारनी चाहिये। नरेन का छोटा भाई गांव में रहता है। वह नरेन के पास बंबई आना चाहता है। लेकिन घर बड़ा न होने के कारण वह उसे नहीं ला सकता। अंत में दुग्गल द्वारा समझाने पर नरेन भाई को मुंबई लाता है। तथा सहायकी स्वीकार कर अनुबंध करता है । इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में महंगाई, बेरोजगारी, मकान की समस्या, आर्थिक विपन्नता आदि कथ्यों को चित्रा ने प्रस्तुत किया है।

4.5 नारी अस्मिता तथा परिजनों द्वारा शोषण :

'प्रेतयोनी' इस कहानी में चित्रा ने नारी अस्मिता, उसकी अस्तित्वपरक चेतना को परिलक्षित किया है। नारी ना ही घर में सुरक्षित है ना समाज में। यह हमारे देश की सबसे बड़ी विडंबना है। समाज के साथ-साथ उसे अपने परिजनों से भी लड़ना पडता है। 'प्रेतयोनि' इस कहानी में अनिता गुप्ता

---

1. रविंद्र कालिया (संपा.) – वागर्थ, जून, 2005, पृष्ठ – 97

अपने परिजनों के छद्म रूप को बरदाश्त नहीं कर पा रही है। अनिता मथुरा से टैक्सी से लौट रही थी तब एक निर्जन स्थान पर वह कामुक ड्राइवर उसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास करता है लेकिन अनिता उसके चंगुल से छुट जाती है। अनिता पुलिस स्टेशन जाकर रिपोर्ट भी लिखवाती है। घर के सदस्य अनिता के साथ बुरा बर्ताव करते हैं। उसे घर से बाहर नहीं भेजा जाता घर में कैद करके रखा जाता है। वह घर के सदस्यों के इस छद्म रूप को स्वीकार नहीं कर पाती। वह आत्महत्या के लिए भी प्रवृत्त होती है तभी वह अखबार में यह खबर देखती है कि उसके सहयोगी उसकी तरफ से लड़ रहे हैं। अंत में वह तय करती है कि अगर वह एक से लड़ सकती है तो पाँच से क्यो नहीं लड़ सकती। यहाँ यह कथन द्रष्टव्य है कि, ''प्रेतयोनि की नीतू के साथ घटी घटना वर्तमान में आम हो गयी है तथा उसका साहस अनुकरणीय है लेकिन उस साहस के प्रतिफल में घर के सदस्यों का दमनात्मक व्यवहार इतने यथार्थपरक रूप से चित्रित है कि कहानी कहानी न होकर नगर पड़ोस में घटी घटना का रिपोर्ताज बन जाती है।''[1]

इस प्रकार कहानी में लेखिका ने नारी अस्मिता के अलग पक्ष को प्रस्तुत किया है।

4.6 स्वार्थांधता :

'लकडबग्धा' प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने मनुष्य पैसों की लालच के कारण किस प्रकार हिंस्र बनता है। यह प्रस्तुत कहानी के माध्यम से चित्रा ने दर्शाया है। पछांहवाली जो न सधवा का जीवन गुजार रही है और न ही विधवा का। उसकी बेटी पुनिया को शिक्षा देना उसे बड़ा करना यही एकमात्र ध्येय पछांहवाली का है। लाचार देवर लंबरदार जायदाद का अकेला मालिक होना चाहता है। इस कारण वह पुनिया को सिखाने के बजाय उसकी शादी करना चाहता है। लेकिन पछांहवाली इसका सख्त विरोध करती है तथा देवर को चुनौती देती है कि वह पुनिया को पढ़ायेगी ही। अंत में लंबरदार पछांहवाली को मार डालता है।

---

1. विजयकुमार देव (संपा.) - अक्षरा, नवंबर-दिसंबर, 2004, पृष्ठ -58

प्रस्तुत कहानी में मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति, नारी शिक्षा की चाह आदि को चित्रा ने परिप्रेक्षित किया है। चित्रा ने प्रस्तुत कहानी में अशिक्षित, चेतित नारी की छटपटाहट, शिक्षा के प्रति सतर्कता तथा नारी अस्मिता इन सभी संकेतों की ओर इंगित किया है। यहाँ यह कथन द्रष्टव्य है कि, ''लकडबग्धा में सवाल सिर्फ पुनिया की पढाई का नहीं है, यह तो नारी मात्र की अस्मिता से जुड़े प्रश्न है।''[1]

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में लकडबग्धा इस घिनौने प्राणी के प्रतीक द्वारा मनुष्य की स्वार्थांधता की तुलना की है जो लंबरदार में प्रतिबिंबित होती है। जायदाद की हवस के कारण मृत्यु से दंडीत पछांहवाली की अवस्था जानवर से भी बदतर है यह प्रस्तुत कहानी द्वारा दर्शाया है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में निम्नलिखित कथ्य उपस्थित होते हैं -

1) जायदाद की हवस, स्वार्थांध वृत्ति।

2) स्त्री - शिक्षा।

3) चेतित विधवा नारी का संघर्ष ।

4.7 सामाजिक असुरक्षा :

'शिनाख्त हो गई है' इस कहानी में बालक सोनू तथा उसकी माँ कुकी तथा पिता निखिल की व्यथा का वर्णन किया है। सोनू को कोई उठाकर ले गया है। वह स्कूल से ही लापता है। अंत में एक आदमी सोनू को घर लाकर छोड़ देता है। जाते - जाते यह हिदायत दे जाता है कि इस तरह लड़के को अकेले मत छोड़ना नहीं तो वह दादा लोगों के हात लग जायेगा । उसे वे लोग शराब की भट्टी पर लगा देंगे। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में सामाजिक असुरक्षा की समस्या को चित्रित किया है। महानगरों में यह समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती चली जा रही है। इस कारण लोगों के मन में असुरक्षा की भावना अधिक पनप रही है। इस प्रकार चित्रा में सामाजिक असुरक्षा को उद्घाटित कर ऐसी समस्याओं पर कोई - न - कोई उपाय योजना होनी चाहिए इस ओर संकेत किया है।

---

1. हरदयाल गोपाल राय (संपा.) - समीक्षा, जुलाई-सितंबर, 1993, पृष्ठ - 23

जब सोनू का पता नहीं लग रहा था तो कुकी के पड़ोसवाले आकर दिखावटी सांत्वना दे रहे थे तथा अनेक मंदिरों में प्रसाद चढाने की बातें कर रहे थे। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी मे महानगरीय दिखावटीपन पर लेखिका ने व्यंग्य कसा है। इस प्रकार लेखिका ने निम्नलिखित कथ्यों को उठाया है -

1) महानगरीय दिखावटीपन ।
2) स्वार्थांधता।
3) कुंठित मानसिकता ।

4.8 पाश्चात्य अंधानुकरण :

'पाली का आदमी' इस कहानी द्वारा चित्रा ने बदलते समय के साथ संस्कृति तथा नीतिमूल्यों में आये बदलावों का चित्रण किया है। पाश्चात्य संस्कृति किस प्रकार मनुष्य पर हावी होती है इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है। कहानी का नायक रवि गांव से पढ़ाई के लिए शहर जाता है। गांव मे उसकी शादी हो चुकी है और उसे एक बेटी भी है। वह शहर जाकर नौकरी करता है तथा वहाँ की ही नौकरी करनेवाली लड़की से शादी करता है। एक दिन बहुत दिनों बाद गांव से एक पत्र आता है। वह पत्र पहली पत्नी की बेटी ने लिखा हुआ है। बेटी ने पत्र में अपनी शादी के लिए निमंत्रण भेजा था तथा पत्नी ने पंद्रह-बीस हजार रुपये माँगे थे। पहली पत्नी रवि को गांव आकर लल्ली को आशीर्वाद देने के लिए बुलाती है तथा वह रवि का कर्तव्य है और लल्ली का अधिकार भी है ऐसा लिखती है। रवि ना ही पत्र लिखता है ना ही डिमांड ड्राफ्ट भेजता है क्योंकि अगर दूसरी पत्नी को पता चलेगा तो वह घर छोडकर जायेगी या कोई अनर्थ कर बैठेगी। इसी वजह से नीरू को कुछ न बताते हुए पत्र फाड डालता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने निम्नलिखित कथ्य उठाये हैं -

1) पाश्चात्य संस्कृती का अंधानुकरण।
2) द्विभार्या समस्या ।

4.8 शून्य :

'शून्य' इस कहानी में चित्रा ने पारिवारिक विघटन परित्यक्त्या नारी की त्रासदी तथा शून्य-सी जिंदगी की पीड़ा को दर्शाया है। प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने आधुनिक युग में पति-पत्नि के बदलते, टूटते, बनते-बिखेरते संबंधों को अनेक पहलुओं से चित्रा ने उद्‌घटित किया है । सरला का पति बेला नाम की किसी औरत के साथ प्यार करता है और उसके साथही रहता है। सरला के पति ने घरवालों की खातिर उनके दबाव में आकर सरला से शादी की थी। बेला शादी - शुदा होकर भी सरला के पति से प्यार करती है। सरला का पति राकेश अब बेला के साथ ही रहता है। 7 वर्ष के बाद राकेश दीपू को लेने के लिए सरला के पास आता है। अदालत के फैसले के मुताबिक दीपू सरला के पास 7 वर्ष तक रहता है । राकेश के मन में अचानक ममता जाग उठी है क्योंकि बेला अब माँ नहीं बन सकती। एक ऐक्सीडेंट में बेला की बच्चादानी निकालनी पड़ती है। सरला यह फैसला कर लेती है कि अब किसी भी कीमत पर वह दीपू को राकेश के पास नहीं सौंपेगी। सरला की जिंदगी राकेश के बिना शून्य-सी बन गयी। अब वही शून्य राकेश तथा बेला के जिंदगी में आ गया है।

प्रस्तुत कहानी में दांपत्य जीवन में आये बिखराव को स्पष्ट किया है। बिना वजह ही सरला को अकेली जिंदगी यापन करनी पड़ती है। चित्रा यहाँ केवल सरला की बात न उठाकर भारत की तमाम ऐसी नारियों के बारे में यह सवाल उठा रही है जिसका कोई उत्तर नहीं है। प्रसिद्‌ध लेखिका आशारानी व्होरा इस संबंध में लिखती है - ''यह सम्मान मुठ्‌ठीभर महिलाओं के लिए ही है। सामान्यतः नारी आज भी उतनी ही पिछड़ी व घटी हुई और उतनी ही असुरक्षित है ।''[1] यह कथन सचमुच ही यथार्थ लगता है। मुठ्‌ठीभर महिलाओं के लिए ही कुछ अधिकार है नहीं तो देहाती तथा सामान्य महिलाएँ बिना वजह आज भी अन्याय सहती दिखायी देती है। अतः प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने निम्नलिखीत कथ्य उठाये हैं -

---

1. डॉ. आशारानी व्होरा - नारी शोषण - आईने और आयाम, पृष्ठ - 231

1) पाश्चात्य संस्कृती का प्रभाव ।

2) पति - पत्नी के संबंधो में दरारें ।

4.9 बेरोजगारी की समस्या :

महानगरों में वक्त के पाबंद नौकरों की जरूरत होती है। ऐसे नौकरों के प्रति ना ही लोगों के मन में आस्था होती है ना ही प्रेम सिर्फ उन्हें काम से मतलब होता है। 'मामला आगे बढेगा अभी' इस कहानी में मोटया नामक किशोरवयीन युवक की कुंठित मानसिकता पर मेमसाहब तथा साहब के द्वारा आघात होता है। बिना बताये बिमारी की वजह से वह आठ दिन घर में रहता है। जब काम पर चला जाता है तो आठ दिन का खाड़ा काटा दिया जाता है। मोटया जब साहब से पूछता है तो साहब उसे डाँटकर, धक्के मारकर बाहर निकालते हैं। मोटया के मन पर इस बात का आघात होता है और वह मेमसाहब की गाडी को नुकसान करता है, सली से मेमसाहब की गाड़ी फोड देता है।

प्रस्तुत कहानी में शहरी सभ्यता, रहन-सहन, पाश्चात्य संस्कृति की तरह रस्मों रिवाज यह दिखाई देता है। प्रस्तुत कहानी में बेरोजगारी की समस्या को भी दर्शाया है। वर्तमान युग में दिन-ब-दिन यह समस्या मनुष्य को जकड़ रही है। बेरोजगारी इसी तरह बढ़ती रहेगी तो युवा वर्ग में और भी उदासीनता छा जायेगी। साथ ही समाज में चोरी-डकैती, अमानवीयता बढ़ जायेगी। कहानी में माँ-बाप के प्यार से वंचित मोटया, माँ की ममता को मेमसाहब में ढुँढता है परिणामतः उसका मोहभंग हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में निम्नांकित कथ्य उभरकर सामने आते है -

1) किशोरवयीन लड़के की कुंठित मानसिकता।

2) महानगरीय सभ्यता तथा पाश्चात्य संस्कृती का प्रभाव।

4.10 परिवार नियोजन :

'दुलहिन' इस कहानी के 'अनी' इस पात्र द्वारा परिवार नियोजन की समस्या को प्रस्थापित किया है। साथ ही 'अम्मा' के द्वारा बुजुर्ग की भूमिका के अस्वीकार को दर्शाया है। अनी संयुक्त परिवार में रहकर भी और घर का माहौल देहाती होकर भी अपनी पढ़ाई पूरी करके पीएच्.डी की उपाधि हासिल करती है। अनी यह तय करती है कि जब तक वह पीएच.डी के थिसीस का काम पूरा नहीं करती तब तक बच्चे को जन्म नहीं देगी। घर की सभी बुजुर्ग स्त्रियाँ अनी को कोसती रहती है। अम्मा भी पेट से है इस बात का पता उसके पति को लगता है तो वो दोनों भी ग्लानी महसूस करते हैं। घर की जब सबसे बूढ़ी सदस्या आजी की मृत्यु के उपरांत अम्मा को अपनी उम्र का एहसास हो जाता है। बयालीस वर्ष की अम्मा अब सास, जेठानी, काकी, भाभी, पत्नी ऐसे रिश्तों में बट जाती है। उसे अब 'दुलहिन' कहके पुकारनेवाला कोई नहीं रहा। वह जोर-जोर से विलाप करके कहती है - ''जिया नहीं रही रे छोटू ... छांड़ि गयी हमका, ... अब हमका ... दुलहिन। हमारा तीज-त्यौहार करी रे ... हमरे बरे नेन न्यौछावर धरी रे ... आज हम बूढा गईन रे छोटू ... बूढा गईन।''[1]

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने परिवार नियोजन इस कथ्य को उठाया है। वर्तमान समाज में आज भी ऐसे कई देहात है जहाँ परिवार नियाजन का ज्ञान नहीं पहुँचा। इस समस्या की ओर चित्रा आवाज उठाना चाहती है। साथ ही उन्होंने अनी जैसे पात्र को प्रस्तुत कर शिक्षा की विरासत के द्वार भी खुले किये हैं। साथ ही नारी की अस्मिता को परिप्रेक्षित किया है।

4.11 द्वेष की समस्या :

व्यक्ति की उन्नति उसकी क्षमता और बौद्धिकता पर आधारित है। जिस व्यक्ति में कार्य करने का सामर्थ्य अधिक है तथा वैचारिक धरातल व्यापक उसके सामने यह द्वेषित व्यक्ति कुछ नहीं कर पाते। कहानी का नायक

---

1. चित्रा मुद्गल - चर्चित कहानियाँ, 'दुलहिन', पृष्ठ - 136

नरेन हमेशा प्रणव के प्रति ईर्ष्या द्वेष की भावना रखता है। प्रणव ही नरेन को फिल्म लाईन में जोड़ देता है। एक दिन संपादक बतरा साहब लेख के बजाय लेखक तथा सिनेमाजगत से जुडे स्टारों के साक्षात्कार लाने के लिए कहते है। तब बतरा साहब ही संदिप मेहरा का नाम सुझाते है। संदिप मेहरा को प्रणव अच्छी तरह जानता है। संदिप मेहरा की साक्षात्कार के लिए प्रणव काम में लग जाता है। आखिर प्रणव साक्षात्कार लाता है। जब यह खबर प्रणव फोन द्वारा बताता है तो नरेन फौरन फोन रख देता है। इस प्रकार हमेशा ईर्ष्या द्वेष में तड़पनेवाला नरेन प्रतिस्पर्धि बनता है और दोस्ती में बाधा निर्माण करता है।

वर्तमान युग में बढ़ रही प्रतियोगिताओं में प्रतिस्पर्धि भी बढ रहे है उसमें अगर रिश्ते बिच मे आ जाय तो रिश्तों मे दरारें निर्माण होती है इसी समस्या को चित्रा ने 'पेशा' इस कहानी द्वारा स्पष्ट किया है।

4.12 वैधव्य की पीड़ा :

'मोर्चे पर' इस कहानी में चित्रा ने रिन्नी की वैधव्य पीडा को दर्शाया है। वैधव्य के कारण रिन्नी की जिंदगी वीरान बन गयी है। रिन्नी के पति मिलिटरी में थे और उनका देहांत हो चुका है। रिन्नी लापता लोगों की लिस्ट में हमेशा पति का नाम ढुँढती है लेकिन एक दिन रिन्नी के पति के दोस्त अवस्थी भैया पता देते हैं कि सुदीप अब दुनिया में नहीं रहे। रिन्नी को सामने अब यह प्रश्न उपस्थित हो गया है कि इन दो बच्चों को कैसे समझाये कि उनके पिताजी अब नहीं रहे। बच्चों के ख्वाइश की खातिर रिन्नी उनके साथ शॉपिंग करने, खाना खाने होटल चली जाती है लेकिन हर वक्त उसे सुदीप की याद आती है और इस कारण वह उस होटल से उठकर चली जाती है। बच्चे अपनी माँ के इस बर्ताव को समझ नहीं पा रहे है। उस वक्त अवस्थी भैया रिन्नी को समझाते हुये कहते है कि, ''मजबूती कहाँ से आती है? कहीं से नहीं। वह अपने भीतर होती है। बस उसे पहचानना होता है। तुम्हारे अंदर भी है। उसे पहचानने का प्रयास करो। तुम पा लोगी तो इन्हें भी दे पाओगी।''[1]

---

1. चित्रा मुद्गल - ग्यारह लंबी कहानियाँ, 'मोर्च पर', पृष्ठ - 62

रिन्नी सचमुच साहस के साथ दोहरी भूमिका निभाने का प्रयास करती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में विधवा की त्रासदी, घुटन को चित्रा ने प्रस्थापित किया है। यहाँ बिजली प्रभा प्रकाश का वक्तव्य कथनीय है - ''प्रेम आकार लेकर धरती पर अवतिर्ण होता है - नारी के माध्यम से जननी के रूप में नारी सृष्टि की केंद्र के रूप में संस्कृति के लिए वही अवलम्बन का वृत्त प्रदान करती है।''[1]

4.13 पिता पुत्र में असंघटन :

परिवार में अनेक रिश्ते होते हैं। हमारे देश में अधिकतर पितृसत्तक परिवार पद्धति है। परिवार के मुखिया पिताजी होने के कारण सभी जिम्मेदारियाँ उन पर होती हैं। अक्सर देखा जाय तो पिता अनुशासनप्रिय होते है। बच्चों को इस कारण हमेशा पिताजी के प्रति भय रहता है। कभी - कभी यह भयता दरारों में बदल जाती है। पिता पुत्र के संबंधो में दूरियाँ निर्माण होती हैं। 'दशरथ का वनवास' इस कहानी में भी पिता-पुत्र के संबंधों में इसी प्रकार की दूरियाँ निर्माण होती हैं। कहानी का नायक रमानाथ के पिताजी अनुशासनप्रिय होते हैं। रमानाथ के पिताजी ने ना ही कभी रमानाथ से प्यार से बातें की ना उसे समझने की कोशिश की। इस कारण रमानाथ हमेशा पिताजी से दूर रहता है। उसे माँ से अधिक लगाव है। जब माँ की तबियत खराब हो जाती है तब रमानाथ माँ से मिलने गाँव जाता है। उसे देखकर माँ हमेशा के लिए आँखे बंद कर लेती है। पिताजी की भी मृत्यु हो जाती है तब रमानाथ को पत्र द्वारा बताया जाता है। रमानाथ फिर भी गांव नहीं जाता ना ही अंतिम विधी के लिए जाना मुनासिब समझता है। एक दिन ईश्वर अंकल की चिट्ठी रमानाथ को मिलती है जिसमें एकमात्र बिल्टी की एक रेल रसोद थी। जब रमानाथ बिल्टी छुडा लेता है तो बडा सा पैकिंग वाला पार्सल होता है। जब पैकिंग खोला जाता है तो उसमें चमचमाती नई साइकिल होती है। उसे उस साइकिल के साथ चिठ्ठी मिलती है जिससे पता चलता है कि नौकरी जाते वक्त

---

1. बिजली प्रभा प्रकाश - जैनेंद्र के उपन्यासों में नारी चरित्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल, पृष्ठ - 65

साइकिल की जरूरत होगी इस कारण पिताजी साइकिल भेज देते हैं। उनकी आखिरी ख्वाइश थी कि रमानाथ को साइकिल दे क्योंकि स्कूल के दिनों से वह देना चाहते लेकिन दे नही पाये ।

पिताजी का पत्र पढकर रमानाथ के पैरोंतले से जमीन ही खिसक जाती है। उसे बहुत पश्चाताप होता है कि वह पिताजी के प्यार को समझ नहीं पाया। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में चित्रा ने पिता - पुत्र के संबंधों में असंघटन के कारण जो दूरियाँ निर्माण हुई उसका चित्रण किया है।

4.14 पति - पत्नी के संबंधो में रिक्तता :

संशय यह दांपत्य जीवन बिखेरने का मूल कारण होता है। पति - पत्नी का जीवन संशय से घिरा होने के कारण दूरियाँ निर्माण हो गयी हैं। विश्वास के पक्के धागों से विवाह के बंधन में पति - पत्नि के रिश्ते को बांधा जाता है। विश्वास की डोर अगर एक बार टूट जाय तो दांपत्य जीवन में बिखराव आता है। 'अग्निरेखा' इस कहानी में मनू तथा अमरेंद्र के जीवन मे इसी प्रकार रिक्तता आयी है जिसकी जड मनू का संशय है।

कहानी की नायिका मनू डिलिवरी के समय दोनों पाँव - गँवा चुकी है। मनू ने अपनी देखभाल के लिए अपनी छोटी बहन शशी को बुलाया है। लेकिन पति अमरेंद्र तथा शशी के रहन - सहन, बोलचाल में उसे परिवर्तन नजर आता है तथा वह पूरी संशयित दृष्टि से अमरेंद्र तथा शशी को देखती है। अमरेंद्र का मानना है कि वह दुख की अकेलेपन की खाई में घसीटती जा रही है। अंत में मनू यह तय करती है कि वह अच्छी जिंदगी जियेगी। वह सोचती है कि वह उनकी ग्रास नहीं बनेगी, वह खुद अपनी मौत मरेगी।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में संशयित कुंठित मनोदशा से ग्रस्त नारी की मनोव्यथा, अकेलेपन के कारण आयी खोखली जिंदगी, निराशा, विरक्तता को चित्रा ने बारीकी से प्रस्तुत किया है।

4.15 नारी की अस्तित्वपरक चेतना :

वर्तमान युग में पाश्चात्य संस्कृति का असर व्यक्ति के रहन - रहन पर हो रहा है। कभी-कभी यह एक्जिक्यूटिव सभ्यता पर मनुष्य इतना आदि हो जाता है की दांपत्य जीवन में भी बिखराव आ जाता है। अच्छे मूल्यों को स्वीकारने के बजाय पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रहा है। इस कारण मूल्यों में विघटन आया है। प्रस्तुत कहानी 'बावजूद इसके' कहानी में बनते-बिगडते मूल्यों के कारण दांपत्य जीवन में आयी त्रासदी, टूटन का चित्रण चित्रा ने किया है।

कहानी का नायक गोयल एक्जिक्यूटिव सभ्यता के प्रति आकर्षित है। उसे पार्टी में जाना, शराब पिना, क्लब में ब्रीज में जमाना, अंग्रेजी फिल्में देखना यह सब पसंद है। उसकी पत्नि प्रीति को यह पसंद नहीं है। एक दिन पार्टी के लिए प्रीति जाती है। पार्टी में मि. खन्ना का हल्के से अपने खुले कंधे पर होंठ रख देना उसे अच्छा नहीं लगा। आखिर वह ने मि. खन्ना को थप्पड मारती है । तब से प्रीति अपने मायके भैया-भाभी के पास रहती है। प्रीति रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करती है लेकिन गोयल ने वहाँ आकर भी काँटे बिछाना शुरू किया। गोयल होटल के बॉस को बता देता है। प्रीति की 'स्व' की तलाश को भी चित्रा ने रेखांकित किया है। प्रीति तय करती है कि वह नौकरी छोड़ देगी लेकिन फिर सोचती है कि ऐसे द्विवेदी मुझे हर केबिन में मिलेंगे। मुझे इनसे लड़ना होगा। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में नारी की स्वतंत्र अस्तित्वपरक चेतना को दर्शाया है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी के अध्ययन के पश्चात् निम्नांकित कथ्य उभरकर सामने आये हैं।

1) नौकरपेशा नारी की समस्या।
2) दांपत्य जीवन में पाश्चात्य अंधानुकरण के कारण बिखराव।
3) नारी की अस्तित्वपरक चेतना।

4.16 बुआ–भतीजी के बदलते संबंध –

प्रस्तुत कहानी 'रुना आ रही है' में रुना बहुत वर्षों के बाद नीमा के घर आ रही है। रुना को लेकर नीमा की बेटी मुनिया बहुत प्रभावित है। वह रुना को अपना आयडियल मानती है। रुना स्थानिय महिला कॉलेज में प्रिन्सिपल है। मुनिया जब भी रुना के आए लेख हो या पेपर में आये साक्षात्कार हो उसकी नत्थी करके रखती है। मुनिया और रुना के इस बदलते रिश्ते को चित्रा ने नये अंदाज से प्रस्थापित किया है। प्रस्तुत कहानी में इस नए बुआ – भतीजी के संबंध को प्रस्थापित किया है।

रूढ़िवाद का प्रभाव –

रुना की शादी श्रीमंत से होगी ऐसा परिवार में तय हो चुका था। नीमा उन दिनों शौकत से चोरी – छिपे मिलती थी। जब यह बात श्रीमंत की माँ को पता चलती है तो ऐसे घराने की लडकियों से हम रिश्ता जोड़ नहीं सकतें ऐसा श्रीमंत की माँ कहती है। इसी वजह से रिश्ता टूट जाता है। दूसरी बात श्रीमंत की माँ अपनी बराबरी के बड़े घराने की लड़की के साथ ही अपने बेटे का ब्याह करना चाहती थी। अंत में कहीं और श्रीमंत की शादी तय हो जाती है।

इस प्रकार रूढ़िवादिता का प्रभाव तथा उच्च – निम्न वर्ग का भेदभाव इन कथ्यों द्वारा चित्रा ने हमारे देश के संपन्न परिवारों की वैचारिक स्थिति मूल्यों को, उसूलों को हमारे सामने प्रस्थापित किया है। साथ ही बुआ – भतीजी के नए संबंध को भी प्रस्थापित किया है। इस प्रकार विवेच्य कथ्यों द्वारा चित्रा ने अनेक समस्याओं को उठाया है।

4.17 सामान्य आदमी की दुर्दशा :

हमारे देश में आज भी राजनेता अपनी पार्टी की मांगे पूरी करने के लिए तथा अन्य कारणों से बार – बार 'बंद' पुकारते हैं। इस बंद से सामान्य आदमी घिसा जाता है। जिन मजदूरों को दो वक्त की रोटी नहीं मिलती ऐसे लोगों

का इस बंद से क्या फायदा होता है? इन सभी समस्याओं को अकंन 'बंद' इस कहानी में किया गया है।

प्रस्तुत कहानी में बेरोजगारी की समस्या को दर्शाया है। कहानी में 'रमेश', 'हरिश' तथा 'नवल' तीनों मेनका फिल्म में काम करने के लिए आए हैं। नवल निर्देशक तथा हरिश और रमेश सहायक के रूप में काम करते हैं। तीनों भी विवशता के कारण वहाँ रूके हुये हैं क्योंकि बाहर कहीं भी उन्हें आसानी से नौकरी नहीं मिलेगी। इन तीनों को बहुत कम तनख्वाह मिलती है, इस कारण बाहर किराया देकर यह नहीं रह सकते। यह तीनों दफ्तर में ही रहते हैं। हमारे देश में युवा वर्ग की बेरोजगारी की समस्या कितना भयानक रूप ले रही है यह प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट किया है।

प्रस्तुत कहानी में हडताल की समस्या को भी दर्शाया है। 'रमेश', 'हरिश', 'नवल' तीनों को बिना खाये पिये रहना पड़ता है। बाहर बंद की वजह से सब दूकाने बंद हैं। तीनों भी भूखे रहते हैं। यह बंद महाराष्ट्रियों ने मद्रासियों के विरोध में पुकारा है। इस कारण हड़ताल चारों ओर है। मात्र सामान्य जनता इसमें पीसती जाती है क्योंकि मजदूरी करने पर ही उन्हें पैसे मिलते हैं तथा दो वक्त की रोटि। किंतु इस बंद की वजह से काम तथा रोटि दोनों भी बंद है। दोनो भी नसीब नहीं होती। राजनेताओं की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा सामान्य लोगों को किस प्रकार अंधेरे मे रखा जाता है यह चित्रा ने दर्शाया है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में बेरोजगार युवा वर्ग की दयनीय अवस्था को दर्शाया है। यही युवक हमारे देश की विकास के पायदान होते हैं। लेकिन यही युवा वर्ग अगर इसी तरह घुमते - फिरते रहेंगे या कम आमदनी में पिसते जायेंगे तो देश का विकास नही हो पायेगा। साथ ही 'बंद' के कारण सामान्य आदमी की जो दयनीय अवस्था होती है असे भी परिप्रेक्षित किया है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष सामने आते है कि दोंनो कहानी संग्रहो में चित्रा ने विभिन्न कथ्यों को उठाकर पाठकों के सम्मुख रखा है। जैसे भ्रष्ट राजनीति, नैतिक मूल्यों में ह्रास, आर्थिक विषमता, झुग्गी-झोपड़ियों की अभावग्रस्त जिंदगी का जीता-जागता दस्तावेज, गरीबी तथा बेरोजगारी, नारी अस्मिता,परिजनों द्वारा शोषण, जायदाद की हवस, विधवा का संघर्ष, स्त्री शिक्षा, सामाजिक असुरक्षितता, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, दांपत्य जीवन में दरारे, किशोरवयीन लड़के की कुंठित मनोव्यथा, द्वेष की समस्या, वैधव्य की पीड़ा, पिता-पुत्र में असंगठन, बुआ-भतीजी के नये संबंध, सामान्य आदमी की दूर्दशा आदि कथ्यों का उद्घाटन किया है। कथ्यों की स्पष्टोक्ती के साथ ही नई उपाय-योजनाओं की ओर भी संकेत किया है, जैसे की 'लकडबग्धा' की पछांहवाली की शिक्षा के प्रति सतर्कता, चेतित नारी, नौकरीपेशा नारी में अस्तित्वपरक चेतना, लड़ने की जागृतता आदि संकेतों को दर्शाया है। कहानी का हर कथ्य नए सिरे से चित्रा ने पाठकों के सामने रखा है। हर कहानी का कथ्य विगत वर्षों में देश में आए राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक बदलावों का प्रतिबिंब है। इन कहानियों के अनेक कथ्य, जैसे - यातना, अमानवीयता, शोषण व हत्या की ऐसी चीख है जो हमें भीतर तक हिला देती है। तो कई कथ्यों में राजनेताओं तथा सामाजिक अव्यवस्था हड़ताल की समस्या आदि का पर्दाफाश किया है। कहानी में चित्रा ने बनते-बिगड़ते अनेक मूल्यों को प्रस्फुटित किया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में कहानियाँ नई परियोजनाओं, सुझाओं, संकल्पों की ओर बढ़ते प्रतीत होते हैं।

❑❑❑❑